International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2018; Page No. 04-07

विश्वभाषाओं से अनूदित हिन्दी नाटय साहित्य

डॉ. दिपा दत्तात्रय कुचेकर
हिंदी विभागाध्यक्षा, कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, ओझर, महाराष्ट्र, भारत।

प्रस्तावना

विश्वभाषाओं से अनूदित हिन्दी नाटय साहित्य की सूदीर्घ परंपरा रही है। यूनानी, ग्रीक, जर्मनी, अमरीका, फ्रेंच, स्विस, इटालियन, रुसी आदि कई विदेशी नाटककारों की नाटय कृतियॉं हिंदी नाटय साहित्य में अनूदित एवं मंचीय होती रही है।

यूनानी सोफोक्लीज का इडिपस रैक्स, ग्रीक के यूरोपिडीज के इफिगनैया इन आउलिस, इलैक्ट्र, जर्मनी – डॉ. जार्ज बुखनकर ''वोएजेक और लेऑस, लेना, अमरीकी – टैनेसी विलियम्स – द ग्लास मैनेजरी, रेगीनाल्ड रोज – ट्वैल्वं ऐंग्रीमैन, जुलियस – द होर्स, शेक्सपियर – वरमन वन, रोमियो एण्ड जूलियट, मर्चेण्ट आफ वेनिस, हैलमेट, द टैम्पैस्ट, जोजेफ एडीसन हैं केटो, ज्यापांल सार्त्र – नेक्रासोब, बेन जॉन्सन हैं बौलपोनि, ब्लैकमेल हैं इलौन लूका कैरागियन, द लास्ट लेटर – डारियो फो हैं कांट पे, वैंट पे, डायनाटकिफात – डॉक्यूमैंटरी – इन द मैटर ऑफ जॉफजे रॉबर्ट : ऑपेनहाइमर, इटैलियन, ऐक्सीडैंटल डेथ आफ एन अनार्किस्ट, फ्रान्स के आल्बेयर कामू – आउट साईडर, रुसी – येब्गेनी श्वार्टस, द ड्रगैन, इब्सन – घोस्ट, बेत्युयाकू मिनारु – द ऐलीफैंट, बर्टोल्स ब्रेईट – थ्री पेनी ऑपेरा, लिओ टॉलस्ताय – द पावर ऑफ डार्कनैस, गोर्की – द मदर, नाट्ने, आर्थर मिलर – ऑल माय सन्स, डाक्सर फॉस्टस – क्रिस्टोफर मार्लो आदि कई विदशी नाटक भारतीय भाषाओं मे अनूदित होकर हिंदी रंगमंच पर मंचित होते रहे है।

विदेशी भाषाओं के नाटक ज्यो के त्यों हिंदी में अनूदित होते रहें किन्तु इनमें कुछ नाटक रुपान्तरण की प्रक्रिया से भी गुजरे है, कुछ नाटकों का भारतीयकरण हुआ हैं। कुछ नाटकों को भारतीय शैली में ढाला गया है। जो भी हो विदेशी नाटक भारतीय रंगमंच पर चर्चित रहे हैं।

नाटयानुवाद की परम्परा भारतेन्दु युग से रही हैं। भारतेन्दु ने देशी भाषा के नाटयानुवाद के साथ ही विदेशी भाषा के नाटयानुवाद भी किया है। अंग्रेजी से सर्वाधिक अनुवाद शेक्सपियर के नाटकों के हुए हैं। पारसी – कंपनियॉं शेक्सपियर के नाटकों का उर्दु रुपांतर करके उनका अभिनय प्रस्तुत करती थी, परिणामस्वरुप इन नाटकों के प्रचार प्रसार में वृध्दि हुई। शेक्सपियर के कुछ अनूदित नाटकों मे मरचेंट ऑफ वेनिस– वेनिस का व्यापारी : आर्या (1818) द कॉमेडी ऑफ एरर्स – भ्रमजालक : मुंशी इमदाद अली, भूल भूलैया – लाला सीमाराम (1885), ऐज यू लाइक इट मनभावन, पुरोहित गोपिनाथ (1896), रोमियो – जूलियट – प्रेमलीला – पुरोहित गोपीनाथ – (1897) मैकबेथ – साहसेंद्र साहस – मथुरा प्रसाद उपाध्याय, (1893) आदि शेक्सपियर के नाटकों के इन अनुवादों के अतिरिक्त तोताराम वर्मा ने जोजेफ एडीसन के केटों का केटो वृत्तांत – (1936) किया यह अविकल अनुवाद है। इसके पात्रों के नाम ज्यों के त्यों रख लिए गए हैं। दृश्य के स्थान पर गर्भांक का प्रयोग किया गया है। इसी नाटक का दूसरा अनुवाद बाबू तोताराम ने कृतांत (1879) में किया है।

भारतेंदु युग में नाटयानुवाद का उद्देश्य हिंदी नाटकों को नयी दिशा देने की दृष्टि से निश्चित रहा होगा। अंग्रेजी नाटकों के संपर्क में आने का ही परिणाम था कि लाला श्रीनिवासदास ने रणधीर और प्रेममोहिनी नामक दुःखात नाटक की रचना की। इस सम्बन्ध में आचार्य शुक्ल ने लिखा है ''रणधीर और प्रेममोहिनी' नाम ही रोमियो एंड जूलियट की ओर ध्यान ले जाता है।'' यही कारण है जो एक भाषा के नाटकों का अन्य भाषा के नाटकों पर प्रभाव दिखाई देता हैं यह संस्कार संक्रमण का महत्वपूर्ण कार्य अनुवाद से होता रहा है।

ईसा की पॉंचवी, छठी शताब्दी पूर्व में रचित एक्सिल्स, सोफोक्लीज और युरोपिडीज की महान त्रासदियों की रचना उनके नाटककारों ने सिर्फ एक ही दिन अभिनीत होने के लिए की थी किन्तु आज हम उन्हें संसार की ऐसी कालजयी कृतियॉं स्वीकार करते हैं जो सदियों से विश्व रंगमंच पर बार–बार मंचित होकर प्रांसगिक बनी हुई है। मानवतावादी, विचारक और प्रखर आलोचक युरीपिडिज को अरस्तु ने सर्वाधिक त्रासद कवि कहा था। इन्होंने 92 वे नाटक लिखे इनमें मीडिया, 'द ट्रोजन विमेन', हिप्पोलीटस', 'द बक्कार', 'है क्युबा' और 'इलैक्ट्रा' आदि सर्वोत्तम त्रासदियॉं मानी जाती है। ब्रख्तियन मिरर ने यूरीपिडिज के अंतिम नाटक 'इफिगनैया इन आउलिस' को उसकी रचना के 2370 साल बाद पहली बार हिंदी में पेश किया। नाटक का हिंदी अनुवाद रामेश्वर प्रेम ने किया था।

'इलैक्ट्रा' महान ग्रीक त्रासदीकार युरोपिडीज के विश्वविख्यात नाटक 'इलैक्ट्रा' को हिन्दी के रंगमंच पर ही नही बल्कि संभवतः सम्पूर्ण भारतीय नाटय प्रेमियों के समक्ष ब्रेख्तियन मिरर ने अभिताभदास गुप्त के निर्देशन में पहली बार प्रस्तुत करने का साहस किया। मृत पिता के प्रति अथाह प्रेम और हत्यारी मॉं एवं उसके प्रेमी के प्रति अनन्त घृणा से भरी प्रतिशोध की धधकती हुई ज्वाला इलैक्ट्रा। यह नाटय कथा अपने प्रभावी घटनाक्रम, उद्दाम भावोद्वेलन, पात्रों के जटिल मनोवैज्ञानिक चरित्रांकन तथा रचनाकार के यथार्थवादी दृष्टिकोण के साथ ही उदात्त काव्यात्मकता के कारण सदियों से अपना महत्व बनाए हुए हैं। 'मीडिया' नारी मनोविज्ञान के कुशल चितेरे और दुनिया के पहले यथार्थवादी ग्रीक नाटककार युरोपिडीज की त्रासदी 'मिडिया' का अनुवाद सलीम आरिफ ने किया था। यह एक ग्रीक मिथक पर आधारित क्रोध, घृणा, अपमान, ईर्ष्या, दुख और प्रतिशोध की आग में धू–धू होनेवाली उस दुस्साहसी औरत की कहानी है जो पति से छली जाने पर घायल शेरनी की तरह अपने शत्रुओं को ही नहीं अपनी कोख से जन्मे दो मासुम बच्चों को भी मौत के घाट पर उतार देती है। 'इडिपस रैक्स' महान युनानी नाटककार सोफोक्लीज की इस कालजयी त्रासदी का हिन्दुस्थानी अनुवाद जितेन्द्र कौशल ने किया था। देवयाणी को झुठलाने और अपने क्रुर भाग्य से टकराने की हिम्मत रखनेवाला शक्तिशाली सम्राट इडिपस नहीं जानता कि विधाता की ताकत और इन्सान के

सामने व्यक्ति कितना बौना है। होनी के जात को काटने की कोशिश में इडिपस किस तरह अनजाने ही उस जाल में फँसकर अपने बाप का हत्यारा, मा का पति और अपने बच्चों का भाई बनकर कैसी अनहोनी कर बैठता है। यह नाटक प्रभावशाली रहा है।

'वोएजेक' केवल चौबीस वर्ष की अल्पायु पानेवाल जर्मनी के प्रतिभावान लेखक डॉ. जार्ज बुखनर ने 'वोएजेक' और 'लेओंस', लेना जैसे श्रेष्ठ नाटकों की रचना की है। वोएजेक आम आदमी के जीवन और उसकी त्रासदी का विश्वसनीय प्रभावशाली एवं जीवन्त प्रस्तुतीकरण है। यह सच्ची घटना पर आधारित नाटक है। जर्मनी मे जॉर्ज क्रिश्चिएन वोएजेक नामक एक नाई ने ईर्ष्या के उन्माद में अपनी रखैल की हत्या कर दी थी, जिसके 1821 मे उसे मृत्युदण्ड दिया गया इस घटना ने बुखरन को प्रभावित किया। इस नाटका का हिंदी अनुवाद विख्यात साहित्यकार रघुवीर सहाय ने किया है।

'द ग्लास मैनेजरी' अमरीका के सुविख्यात नाटककार टेनेसी विलियम्स के जग प्रसिध्द नाटक 'द ग्लास मैनेजरी' का ललित सहगल कृत अनुवाद 'कॉच के खिलौने' है। 'द ऐलीफेंट' बेत्सुयाकू मिनारु के युध्द विरोधी नाटक का वी.के. शर्मा कृत 'कुंजर' हिंदी अनुवार है। हिरोशिमा के अणुबम विस्फोट के बाद दुर्भाग्य वश बच रहे लुंज-.पँज, विकृत एवं कुण्ठित व्यक्तियों की असहय यंत्रणा और दुस्वप्नों के माध्यम से युध्द के दिल हिला देनेवाले परिणामों को रेखांकित करने के उद्‌देश्य से लिखी गई एक प्रासंगिक एवं अर्थवान कृति है। 'द टैम्पैस्ट' शेक्सपियर का सुविख्यात नाटक द टैम्पैस्ट' का अनुवाद 'तूफान' है। 'हैमलेट' – शेक्सपियर का संभवतः संसार के रंगमंच पर सबसे ज्यादा प्रस्तुत विश्वविख्यात नाटक 'हैमलेट' का अनुवाद अमृतराय ने किया है।

'स्ट्राइक' – आनुनिक औद्योगिक जीवन के मालिक मजदूर के विडम्बनापूर्ण सम्बन्धों और संघर्षो पर गॉल्सवर्दी ने 1909 में लिखे नाटक का अनुवाद प्रेमचंद ने हरप्रसाद सक्सेना के सहयोग से 'हडताल' नाम से कर 1929–30 में प्रकाशित किया। गॉल्सवर्दी के 'द सिल्वर बॉक्स जस्टिस' आदि के अनुवाद भी प्रेमचंद ने किए हैं। साथ ही इब्सन के 'घोस्ट' का 'प्रेत' अनुवाद नेमिचंद्र जैन, आगाथा क्रिस्टी के 'टैन लिटिल निसर्ग' का 'दस नन्हें नीग्रों – रवि सागर द्वारा, ज्यांपात्र सार्त्र के ज्वलन्त समस्या को लेकर लिखा गया एकमात्र विशुध्द राजनीतिक नाटक 'नेक्रोसोव' – रंजीत कपूर द्वारा अनूदित, बर्गसा का सर्वश्रेष्ठ नाटक 'एन्हेन्स' का 'चुनौती' नामक अनुवाद, वियना में जन्मे स्विस नाटककार के रुप में विख्यात फ्रिटस 'हॉचवाल्डर' का नाटक 'द पब्लिक प्रोसीक्यूटर' का अनुवार अरुण सहगल द्वारा किया गया है।

'इन द मैटर जॉफ जे. रौबर्ट ऑपेन हाइमर' जर्मन रंगमंच के प्रमुख नाटककार हायनार किफान के 1964 में लिखित डॉक्यूमैंटरी नाटक का एम.के. रैना द्वारा किया गया अनुवाद 'मैं ही हूँ काल पुरुष : ऑपेन हाईमर' है। युध्दोन्माद और उसके बर्बर परिणामों पर आधारित नाटक। युध्द हमारे समय की सर्वाधिक जीवन्त, जटिल, महत्वपूर्ण एवं गम्भीर समस्या है। और सम्भवतः इसका सही समाधान नीत्शे के बजाए बुध्द, ईसा और गांधी के पास ही है। विश्व को संभावित महानाश से बचाने के लिए सत्य, अहिंसा, प्रेम, सहयोग, शान्ति, दया आदि मानवीय गुणों का विकास अत्यंत आवश्यक है।

युरोपीय नाटक के स्वरुप का अधिक निकट परिचय कराने के लिए भारतेंदु जी ने 'दुर्लभबन्ध' नाम से 'मर्चेण्ट आफ वेनिस' के अनुवाद का प्रारम्भ किया। घटनावैचित्र्य, व्यक्ति वैचित्र्य – चित्रण, यथार्थवाद, संघर्ष आदि पाश्चात्य नाटयकला के प्रधान गुण है। 'मर्चेण्ट आफ वेनिस' के अनुवाद द्वारा भारतेंदु हिंदी नाटक में इन गुणों के यशोचित समावेश के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करना चाहते थे। इस बात से स्पष्ट होता है की भारतेंदु नवयुग की चेतना के अनुरुप नवीन नाटयधर्म के अभ्युत्थान के लिए एक सुनिर्धारित योजना के अनुसार काम कर रहे थे, उनका अनुदान कार्य इस योजना का प्रधान अंग था। किसी विदेशी नाटक के परिवेश और चरित्रों को सिर्फ हिंदुस्तानी नाम देकर हिंदुस्तानी नहीं बनाया जा सकता रुपान्तरण की प्रक्रिया महत्वपूर्ण होती है। रुपान्तरण की अनिवार्य शर्ते भी होती है संवेदना, संस्कृति, आचार–विचार और सामाजिक– आर्थिक स्थितियों की समानता।

विदेशी नाटकों के अनुवाद के साथ–साथ उन नाटकों का भारतीयकरण किया गया। कभी विदेशी नाटकों को देशीकरण तो कभी देशी नाटकों का विदेशीकरण हुआ। विदेशी नाटकों से प्रभावित होकर देशी नाटक लिखे गए। राष्ट्रीय नाटक अन्तर्राष्ट्रीय बने और अन्तर्राष्ट्रीय नाटक राष्ट्रीय बन गए।

भारतेंदु ने देशी भाषा के नाटयानुवाद के साथ अंग्रेजी के शेक्सपियर के 'मर्चेण्ट ऑफ वेनिस' का 'दुर्लभबन्धु' नाम से भारतीयकरण किया। शेक्सपियर के 'मर्चेण्ट ऑफ वेनिस'में मैत्री के अति उदात्त आदर्श की अवधारणा की गयी है। यही कारण है कि भारतेन्दु जी ने उसका एक नाम दुर्लभबन्धु और दूसरा 'वंशपुर का महाजन' रखा। भारतेन्दु ने इस नाटक में कथानक और वातावरण के भारतीयकरण की चेष्टा की इसमें वेनिस वंशपुर हो गया, नाटक के पात्रों के नामों का भारतीयकरण बडी सफलता से हुआ है। ऐण्टानिओ को अनन्त, सैयानियों का बसन्त, शाइलाक को शैलाक्ष, पोर्शिया को पुरश्री नेसिका को यशोदा आदि कर दिया गया। मूल नाटक के ईसाई और यहुदियों के पारस्पारिक विद्वेष को अनुवाद मे आर्यों और जैनियों के धार्मिक द्रोह और घृणा का रुप दिया गया है। यहुदी महाजन मारवाड का बनिया बन गया।

अमरीका के विश्वविख्यात नाटाकार आर्थर मिलर का नाटक 'ऑल माई सन्स' का प्रमिभा अग्रवाल ने भारतीयकरण किया – वे इस संदर्भ मे कहती हैं – अनुवाद करने चली तो लगा कि अनुवाद के साथ ही यदि इसका भारतीय रुपान्तर भी कर दिया जाय तो नाटक अधिक अर्थपूर्ण हो उठेगा। हम सही मायनो में लडाई की विभीषिका से भले ही न गुजरें हो पर आये दिन जनकल्याण के कामों में जो धोखाधडी, लूट–खसोट दिखलायी पडती है, वह कम बडा अपराध नहीं है, उसका 'ऑल माइ संस, की घटनाओं से अद्‌भूत साम्य प्रतीत होता है। फलस्वरुप नाटक के भारतीय बदन पहनाया गया। मूल नाटक का घटना स्थल अमरीका के किसी शहर का बाहरी हिस्सा है, रुपान्तर का घटना स्थल इलाहाबाद के आस–पास कोई छोटा भारतीय शहर है। जैसे घटना स्थल को अमरीका से भारत की धरती पर लाना पडा वैसे ही पात्रों को भी ऐसा करने में काई असुविधा नही हुई, क्योंकी उनकी भावनाएँ एवं प्रतिक्रियाएँ मानव मन के जिस गहन तलसे सम्बन्धित है वह सार्वभौम हैं शाश्वत हैं। नाटक परिवेश के साथ मंचसज्जा में, पात्रों के नामों में परिवर्तन किया गया। पात्र बने जमुना, प्रसाद, प्रदीप, अनु, प्रदीप की मॉ आदि। विश्वयुध्द की पृष्ठभूमि में लिखे गये इस नाटक का कथानक सार्वभौम महत्व का है, ऐसी स्थिति किसी भी देश, काल में पायी जा सकती है।

स्विज नाटककार फ्रेडरिक इरेनमेंट्ट के विख्यात नाटक 'द विजिट' का सुनील सिन्हा तथा अमिताभ श्रीवास्तव ने 'आगमन' इटैलियन डारियों फो के ऐक्सीडैटल डैथ आफ एन अनार्किस्ट का 'एक और दुर्घना' तथा कांट पे, वौंट पे का खाली जेबें बढते दाम का अमिताभ श्रीवास्तव ने, रुसी लेखक येब्गेनी श्वार्टस के 'द ड्रगैन' का 'माया बाजार' – देवेन्द्रराज अंकुर आदि नाटयानुवाद उल्लेखनीय है। ब्रेख्त के सुविख्यात संगीत नाटक 'थ्री पैनी ओपेरा' का देवेंद्र भसिन [illegible]

'देख तमाशा देख . . . तमाश देख' आर्थर मिलर के आल माई सन्स का अरुण सहगल द्वारा 'लहु का रंग एक है', लिओ तॉलस्ताय के 'द पावर ऑफ डार्कनेस' का जैनेंद्र कुमार द्वारा 'पाप और प्रकाश' आदि रुपान्तरण उल्लेखनीय है।

रेगीनाल्ड रोज – ट्वैल्व ऐंग्री मैन – रंजीत कपूर द्वारा एक रुका हुआ फैसला, शेक्सपियर के समकालीन बेन जॉन्सन के बौलपोनि का अरुण सहगल द्वारा चोर के घर मोर, आर्थर मिलर के आल माई सन्स का अरुण सहगल द्वारा लहु का रंग एक है। लियो तॉलस्ताय के द पावर ऑफ डार्कनैस का जैनेन्द्र कुमार द्वारा पाप और प्रकाश आदि रुपान्तरण उल्लेखनीय हैं।

आर्थर मिलर के विख्यात नाटक डैथ ऑफ दे सेल्स मैन पर जितेन्द्र कौशल का एक सपने की मौत, इऑन लूका कै रागियल के द लास्ट लेटर का सत्य प्रकाश द्वारा ब्लैक मेलर, जे.व्ही. प्रीस्टले के ऐन इंस्पैक्टर काल्स का सुरेन्द्र शर्मा और प्रमिभा अग्रवाल द्वारा एक इंस्पैक्टर से मुलाकात आदि आलेख, गोर्की के विश्वविख्यात उपन्यास के ब्रेख्त कृत नाटयांतर का अनुवाद बलराज पंडित ने किया। यह शोषण, अन्याय और अत्याचार के विरुध्द आम आदमी के अनवरत संघर्ष की यह अमर गाथाये विशेष रुप से उल्लेखनीय हैं। नोबेल पुरस्कार प्राप्त फ्रांस के आल्बेयर कामू ने 1940 मे आउट साईडर उपन्यास लिखा इसका हिंदी अनुवाद राजेंद्र यादव ने किया अजनबी नाम से देवेंद्र राज अंकुर ने आलेख तैयार किया है।

विदेशी नाटकों के देशीकरण के अनेक प्रयोग किए है। गद्य अथवा पदय में लिंखे गए भाषान्तरों का रास्ता अनुवाद का सबसे आसान तरीका है। इसके सैंकडों उदाहरण है। दुसरा तरीका है रुपान्तरण का जिसमें विदशी पात्रों, स्थानो और घटनाओं को स्वदेशी बनाकर रचना की मूल शैली में ही प्रस्तूत किया जाता है। कई नाटक विदेशी होते हुए भी भारतीय शैली को अपनाकर खेले गए हैं। गोगोल के सुप्रसिध्द नाटक 'द गवर्नमेंट इंस्पैक्टर के मुद्राराक्षस द्वारा नौटंकी शैली में किया गया 'आला अफसर', इसके कथ्य और शिल्प दोनों को परिवर्तित किया गया। शेक्सपियर के मूल नाटक के कथ्य और शिल्प में कोई विशेष परिवर्तन न करते हुए 'मैकबेथ' की प्रस्तुति शैली में 'यक्षगान' रचनात्मक प्रयोग कर 'बरमनवर' अनुवाद रघुवीर सहाय ने किया जो विशेष उल्लेखनीय हैं। मेकबेथ जैसी विश्वप्रसिध्द तथा कालजयी रचना को 'यक्षगान' जैसी भारत के सुदूर दक्षिण की लोक शैली में करने का तात्पर्य निर्देशक के तर्क में सशक्त लगता है – "शेक्सपियर की त्रासदियों में और विशेषकर –'मैकबेथ' में जो वीर, रौद्र भय, अदभूत, करुण आदि प्रचुर मात्रा मे मौजूद है वे सार्वभौमिक तो हैं किन्तु अपने अति अपने मानवीय स्थितियों और चरित्रों के कारण 'यक्षगान' के संदर्भ में मुझे अत्यंत निकट के लगते हैं। नाटक में चरित्रों का प्रवेश – प्रस्थान, युध्द एवं भावात्मक तनावों को शरीर, गती और हाव भाव आदि के माध्यम से प्रदर्शित करने का विशेष गुण 'यक्षगान' ने विकसित किया हैं। इस प्रस्तुति में 'यक्षगान' में मैकबेथ नही अपितु मैकबेथ में यक्षगान के तत्वों का प्रयोग किया गया है।"

विदेशी नाटककारों मे शेक्सपियर के बाद सम्भवतः ब्रेख्त ही ऐसा नाटककार है जो भारत में सबसे ज्यादा पढा और खेला गया है। आर्तुरो उईं, गैलीलियो, गुड वूमन आफ सैत्जुआन, थ्री पैनी ओपेरा, काकेशियन चाक सर्कल एवं मदर करेज आदि। ब्रेख्त से प्रत्यक्ष साक्षात्कार कराने के उद्देश्य से 'ब्रेख्त आन ट्रायल' के अन्तर्गत इन नाटकों का प्रदर्शन–प्रशिक्षण कराया गया। विदेशी नाटकों की सशक्त अभिव्यक्ति के लिए समय–समय पर फ्रित्जबैने वित्ज, शैखनर आदि के निर्देशन में नाटकों का मंचन किया गया है। परिमामस्वरुप इनके निर्देशन का असर देशी रंगकर्मियों पर हुआ। विदेशी रंगशिल्प से भारतीय रंगशिल्प प्रभावित हुआ। विदेशी नाटकों को स्थानीय बोली और शैलीयों में ढाला गया। देशकाल, रुप–रंग–शैली मे ढालकर विदेशी नाटक देशी बन गया। विख्यात जर्मन रंगकर्मी फ्रित्ज बेनेवित्ज के निर्देशन मे ब्रेख्त के 'कोकेशियन चाक सर्कल' का बुंदेली रुपान्तर' इंसाफ का फेरा' है। इसका आधार लोककथा होने से जर्मन से अंग्रेजी, अंग्रेजी से हिंदी और हिंदी से बुंदेली की यह यात्रा प्रभायुक्त रही है।

सेमुअल बेकेट के अति चर्चित नाटक 'वेटिंग फॉर गोडो' को अलखनंदन ने छत्तीसगढी में गोडा ला देखत हन बनाकर प्रस्तुत किया। "मध्यप्रदेश के प्रसिध्द लोकनाटय नारा की नकलशैली में प्रदर्शित यह नाटक भाषा और अभिनय में स्थानीय होने के बावजूद भी यूरोपीय है।

जिस रुप में विदेशी नाटक भारतीय नाटय शैली में रचे–बसे उसी रुप में भारतीय नाटकों में विदेशी शैलीयॉ भी दिखाई देती है। सत्यव्रत सिन्हा की 'अन्धेर नगरी' में एब्सर्ड शैली का प्रयोग, अमाल अल्लाना के भगवदज्जुकम तथा 'आधे–अधूरे' में जपानी रंग–रुढियों का प्रयोग, विजय सोनी के 'आशंका के द्वीप' तथा 'जॉनबुल' में ग्रोतोवस्की की मनोशारीरिक शैली का इस्तेमाल, ब.व. कारन्त द्वारा 'किंगलियर' में यक्षगान का प्रयोग, कविता नागपाल के काकेशियन चॉक सर्कल में पंजाब के लोक नाटयरुप नकल का प्रयोग, रैना और बंसी कौल के अधिकांश नाटकों में भारतीय लोक रंग–तत्वों एवं विदूषक का प्रयोग उल्लेखनीय है।

भारतीय भाशाओं के नाटकों के अनुवाद विदेशी भाषाओं मे होते रहें हैं। वाजिद अली शाह के प्रोत्साहन से अनामत कवि ने नृत्य संगीतमय 'इन्द्र सभा' गीतिनाटय प्रस्तुत किया। इस नाटक की इतनी ख्याती हुई कि विभिन्न देशी और विदेशी भाषाओं में इसका रुपान्तर हुआ। "जर्मन भाषा में सन 1892 ई. में इसका अनुवाद लिपजिग नगर में छपा।" साथ ही बिंदू बत्रा द्वारा मोहन राकेश के आधे–अधूरे' का 'हाफ वे हाऊस', प्रिया अडालकर द्वारा विजय तेन्दुलकर के 'खामोश! अदालत जारी है' का 'साइलेंस! कोर्ट इज इनसेशन' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

विदेशी नाटककारों में एल्फ्रेड क्रिस्टिंसन, हरमैन सडरमैन, जर्मनी के प्रख्यात यथार्थवादी नाटककार रहे हैं। 'हाइहीमेट' मैगडा के नाम से सन 1983 में प्रस्तुत सर्वात्कृष्ट नाटक है। वेडेकाइण्ड 'अर्डजिस्ट' नाटय रचना दो खण्डों में हैं। इंग्लैंड में यथार्थवादी नाटकों का प्रारम्भ टी. डब्ल्यु राबर्टसन से हुआ है। 'कास्ट' इनकी सर्वश्रेष्ठ रचना रही है जो मैलो ड्रामा के अनुरुप है। आस्कर वाइल्ड और जार्ज बर्नार्ड शॉ प्रसिध्द यथार्थवादी नाटककार हुए हैं। ऑस्कर वाइल्ड का 'दी इम्पॉटर्न्स ऑफ बींग अर्नेस्ट 1815 में अभिनीत हुआ। समस्या नाटकों के निर्माताओं में सिंगी का प्रधानस्थान माना जाता है– इनके ले ब्वॉय ऑफ दि वैस्टर्न वर्ल्ड, राइटर्स टु द. सी. आदी नाटक महत्वपूर्ण हैं। बर्नार्ड शॉ के मिसेज वाटेन्स प्रोफेशन में वेश्या व्यवसाय की आलोचना है। मैन ऐण्ड सुपरमैन में दार्शनिक तत्वों का विवेचन और पिग मैलियन में पौराणिक कहानी है।

विदेशी नाटककारों का प्रभाव निश्चित रुप में भारतीय नाटककारों पर रहा है। चाहे वह यथार्थवादी हो या आदर्शवादी हिन्दी के नाटककार इनसे प्रभावित रहे हैं। भारतेंदु युग में राममोहन राय, स्वामी दयानंद, कालिदास, भवभूति आदर्श थे आज इब्सन शॉ आदि हमारा पथ प्रदर्शन कर रहे हैं। भारतीय रंगमंच पर विदेशी नाटय कृतियॉ, पारसी कम्पनियॉ, राष्ट्रीय नाटय विदयालय, ग्रीष्म नाटय उत्सव, अंतरंग, छायानट, संभव आदि संस्था, शौकिया नाटय मंडल मंचित करते रहे हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में युवा वर्ग को यह स्वर्णिम अवसर है कि वे विदेशी – देशी नाटकों के अनुवाद कर उन्हें विश्व रंगमंच पर स्थापित करें। अपने अनुवाद, निर्देशन, अभिनय आदि द्वारा भारतीय

रंगमंच समृध्द बनाए। अनुवाद का विस्तृत क्षेत्र वर्तमान युवा वर्ग की बेरोजगारी की मुख्य समस्या को कुछ मात्रा में हल करने का उपाय हो सकता है क्योंकी अनुवाद वर्तमान परिप्रेक्ष्य की अनिवार्य मांग है।

संदर्भ

1. हिंदी नाटक उद्‌भव और विकास – डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, संस्करण – 1991
2. हिंदी रंगकर्म दशा और दिशा – जयदेव तनेजा, तक्षशिला प्रकाशन, 23/4762 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002, प्र.सं. 1988
3. आनुनिक भारतीय रंगलोक – जयदेव तनेजा, भारतीय ज्ञानपीठ, 18 इन्स्टीटयुशनल एरिय, लोदी रोड, नई दिल्ली 110003, प्र.सं. 2006
4. नाटककार भारतेंदु और उनका युग – डॉ. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, सुलभ प्रकाशन, 17 अशोक मार्ग लखनऊ प्र.सं. 1990
5. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक (मोहन राकेश के विशेष संदर्भ मे) – डॉ. रीता कुमार, भूमिका प्रकाशन, 2/38 अंसारी मार्ग, दरियागंज, 110002, प्र.सं. 1991
6. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. माधव सोनटक्के, विकास प्रकाशन, 311 सी, विश्व बैक बर्रा, कानपुर 208027 तृ.सं. 2009
7. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेंद्र, डॉ. हरदयाल, मयूर पेपरबैक्स, ए–95 सेक्टर – 5, नोएडा 201301, तृतीय संशोधित एवं परिवर्धित सं. 2009
8. मेरे बच्चे – डॉ. प्रतिभा अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि. 8 नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, प्र.सं. 1978
9. भारतीय रंगकोश, खंण्ड –2 संपा– प्रतिभा अग्रवाल, राष्ट्रीय नाटय विद्यालय, बहालपुर हाऊस नई दिल्ली, 110001, प्र.स. 2006
10. भारतीय साहित्य कोश संपा.डॉ. नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 23 दरियागंज, नई दिल्ली 110002, प्र.सं.1981
11. हिंदी ग्रंथ कोश – संपा. यशपाल महाजन, भारतीय ग्रंथ निकेतन, दरियागंज, नई दिल्ली 110002, प्र.सं.1987
12. हिंदी साहित्य कोश – भाग 1 संपा. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड, कबीर चौरा, वाराणसी, प्र.सं. सवंत 2015
13. मानक हिंदी कोश खण्ड –4 संपा. रामचंद्र वर्मा, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग –1966